पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान।। २१ ।।

परमधाम की जमीन पचास हजार योजन की है जो मोमिनों को कुलजम सरूप की वाणी के नुस्खे से प्राप्त हुई। मोमिनों के अर्श दिल ही हवेलियां हैं। जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना वीरान थीं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी वाणी से पहचान कराकर इन मोमिनों को जागृत कर दिया।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि कुरान के किस्से आखिर को होने वाली बातें हैं। मैंने तुमको बताई हैं। दुनियां वाले बातूनी अर्थों को बीती बातें कहते हैं और समाज के सामने हकीकत की पहचान करने में अड़चनें डालते हैं। ऐसा बड़ा जुल्म ढाते हैं।

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरानके पेहेले हो गए।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक।। २३ ।।

यह लोग कहते हैं कि यह कुरान के किस्से बीती बातें हैं जो पहले हो गई हैं, वह जमाना गुजर गया, रद्द हो गया है, इसलिए अब इस ज्ञान को समझने में क्यों डरते हो?

ए जो इमाम गजनवीका मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या।। २४ ।।

इमाम फकीर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी हैं और गजनवी सुल्तान महाराजा छत्रसालजी हैं। इन दोनों स्वरूपों का किस्सा भविष्य में है ग्यारहवीं सदी में आएगा। कयामत के निशान जाहिर होंगे। इसको पढ़ने वाले लोग कहते हैं, यह बीती बात है।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।
काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर।। २५ ।।

यह अनपढ़ सुन्दरसाथ कुरान पढ़ते हैं और उसके छिपे रहस्यों को समझा रहे हैं, इसलिए जाहिरी मायने से भूले-भटके लोग दिल के कानों से सुनो और विचारो कि खुदा ने संसार में आने का जो वायदा किया था, वह श्री प्राणनाथजी बनकर साक्षात् पन्नाजी में विराजमान हैं, परन्तु उनके स्वरूप को जाहिरी आंख से न देखना। अन्दर की आंखों से देखो और पहचानो।

ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल।। २६ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस स्वरूप को दिल की आंखों से पहचान कर जिनको ईमान और इश्क आएगा, वही सच्चे मोमिन हैं और उनको दुनियां से पाक हो गए समझना।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०५ ।।

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान।। १ ।।

नूरनामे में मुहम्मद साहब की पहचान को देखो। मुसलमान अपने आपको कुरान का पढ़ा-लिखा कहते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों को नहीं समझते।

Nijanand App

महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान।
इन मुरगने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल।। २ ।।

मुहम्मद साहब को आसमानी मुर्ग कहा है, जिसने पानी में नहाकर अपने परों को धोया। इस किस्से की पहचान अब श्री प्राणनाथजी करा रहे हैं।

तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।। ३ ।।

आसमानी मुर्ग श्यामाजी की आत्मा है, जिसने इल्म के सागर में नहाकर अपने पंख फड़फड़ाए जिससे एक लाख बीस हजार बूंदें गिरीं। दस-दस बूंदें एक एक मोमिन की पहचान है। जिन मोमिनों ने आखरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के हकीकत और मारफत के ज्ञान से कयामत के निशान और कुलजम सरूप की वाणी को दूर-दूर तक जाहिर किया।

कलाम अल्लाकी तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल।
महंमदको करहीं औरों समान, इन दुनियांकी ए पेहेचान।। ४ ।।

कुरान में इस तरह के रहस्य लिखे हैं। अब दुनियां वालों की बुद्धि देखो। यह मुहम्मद को भी दूसरे पैगम्बरों के समान गिनते हैं।

जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमदको औरों समान।। ५ ।।

मुहम्मद साहब के मानने वाले भी ऐसे अन्धे हो रहे हैं और उनके स्वरूप की पहचान नहीं करते। यह जाहिरी मुसलमान मुहम्मद को दूसरे पैगम्बर के समान गिनते हैं।

ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्लाकी सुध न परी।
पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी।। ६ ।।

ऊपर के जाहिरी मायने लेकर यह बड़ी भूल करते हैं, इसलिए उनको कुरान के बातूनी मायनों की पहचान नहीं है। रसूल साहब ने पहले बुत परस्ती छुड़ाई और शरीयत की राह चलाई। लोगों ने इसी को ही मुसलमान धर्म समझ रखा है।

पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धर्‌या करज।। ७ ।।

जो अपने अंगों को धोकर बावन मसले पालता है, नमाज पढ़ता है, रोजा रखता है, उसको तुम मोमिन कहते हो। यह तो मुसलमान को फर्ज बजाने के लिए नियम बनाया गया है, जिसे यह ऐसे पालन करते हैं, जैसे किसी का कर्ज देना हो।

और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी।
ए लानत लिखी माहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान।। ८ ।।

कुरान में इब्राहीम पैगम्बर को जो सजा मिली थी, मुसलमानों ने उसे बड़ा भारी समझकर अपना लिया है। सजा को शरीयत बना ली।

Nijanand App

सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए हैं बद फैल काम।
जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान।। ९ ।।

शरीयत के मानने वाले कहते हैं कि इब्राहीम पैगम्बर ने बदफैली की थी और जिन अंगों से उसने नियम को तोड़ा था, पंच लोगों ने उन अंगों को काटने का आदेश दिया था। पैगम्बर इब्राहीम मर न जाएं इसलिए पंचों ने हाथ, पैर, सीने के कपड़े कटवा दिए और मुंह से दाढ़ी मूछ को विशेष रूप बनाकर सुंनत करा दी।

इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुंनत बड़ी कर लई।
जिन दई लानत ऊपर तकसीर,सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर।। १० ।।

इब्राहीम को यह बदफैली की सजा मिली थी। इलम के पढ़े-लिखे मुल्लाओं ने सुंनत को बड़ा भारी मानकर शरीयत का नियम बना दिया।

ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याहीमें कर लई मुसलमानी।
लानत करी ऊपरकी बानी, इनों सोई भली कर मानी।। ११ ।।

इन लोगों को कुरान की गुझ (गुप्त) बातों का पता नहीं है। इन्होंने शरीयत के नियमों को जो इब्राहीम को सजा मिली थी, उसे ही श्रेष्ठ मानकर शरीयत बना ली है।

पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार।। १२ ।।

अपने आपको कुरान का ज्ञानी (आरिफ) कहलवाते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों में से एक को भी नहीं जानते हैं, परन्तु दावा लेते हैं कि हम अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान चारों किताबें पढ़े हैं, परन्तु दिल के ऐसे अन्धे हैं कि उनके गुझ (गुप्त) भेदों पर विचार तक नहीं करते हैं।

तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर।
ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर।। १३ ।।

तौरेत, अंजील जंबूर और कुरान जिन पैगम्बरों पर उतरी हैं उन पैगम्बरों के नाम बताते हैं।

मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद।
और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद।। १४ ।।

मूसा, ईसा और दाऊद यह सभी हिन्दुओं में आए हैं। उनमें से भी जो मुहम्मद साहब आखिरी पैगम्बर हैं, वह भी हिन्दुओं में आए हैं।

मनसूख तीन कही ता मिने, फुरकान एक यों भने।
समझे ना किताबोंके तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं। १५ ।।

कुरान में लिखा है कि अंजील, जंबूर और तौरेत को रद्द कर दिया है। किताबों को रद्द करने का अर्थ क्या है और उनमें लिखा क्या है? जाहिरी लोग जानते नहीं हैं।

तौरेत लिखी ठौर बीसेक कही, सो जुदे जुदे नामों पर दई।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम।। १६ ।।

अलग-अलग नाम के बीस पैगम्बरों ने तौरेत किताब को लिखा है। इसमें अल्ला ताला के वचनों के अनुसार वह खुद ईमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर होकर कयामत के निशान जाहिर करेंगे।

Nijanand App

अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक।। १७ ।।

अब महामतिजी कहते हैं कि कौन सी किताब सही रही और कौन सी रद्द कर दी? जाहिरी मुसलमान इसको नहीं समझ सके, इसलिए उनके संशय दूर नहीं हुए। इन ग्रन्थों के बातूनी अर्थ समझे बिना संशय नहीं मिट सकते।

कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और।
अब को अव्वल को कलाम आखिरी, ए नीके तुम ढूंढ़ो जाहेरी।। १८ ।।

कुरान चार ठिकानों में लिखी है, ऐसा कहा है, अर्थात् कुरान को जानने वाले बसरी, मलकी, हकी, मुहम्मद की तीन सूरतें तथा चौथे मोमिन ही इनके बातूनी अर्थ जान सकेंगे। जाहिरी अर्थों को पकड़े रहने वाले विद्वान लोगो! अब तुम इस बात पर विचार करो कि कौन से ग्रन्थों को रद्द किया गया और उन्हीं के नाम से कौन सी किताबें दी गईं?

किस्से कुरानके डारो तित, रद जमाने हो गए जित।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर।। १९ ।।

जो जमाना रद्द हो गया है कुरान के किस्सों को बीती बातों में क्यों बताते हैं? यह तो आखिर की बातें हैं जो कयामत के समय जाहिर होंगी।

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान।। २० ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि जो इनके ऊपर के मायने लेगा वह हार जाएगा। शैतान अबलीस सबके दिलों में बैठा है। वह सबको जाहिरी मायनों में उलझा देता है और बातूनी गुझ (गुप्त) बातों को समझने नहीं देता। वह पढ़े-लिखे लोगों को भी आज्ञा न मानने वाला बना देता है।

जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी।। २१ ।।

अब जो कोई जाहिरी अर्थ लेंगे वही आज्ञा न मानने वाले होंगे। उनको निश्चित ही दोजख में जाना पड़ेगा। उनके लिए जगह-जगह पर लानत लगेगी, ऐसा लिखा है। इन बातों को जाहिरी लोगों ने अपने दिल में रख लिया है।

अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरोंमें गिनो।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि हमारी दूसरी बात सुनो। मुहम्मद साहब को दूसरे पैगम्बरों के समान क्यों मानते हो? यदि तुम कुरान और हदीस के छिपे रहस्य को जान जाओ, तो मुहम्मद साहब की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) और मोमिनों की पहचान हो जाएगी।

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर।। २३ ।।

कुरान में खुदा के पैगाम देने वाले पैगम्बरों की संख्या एक लाख बीस हजार बताई है। उनके उपर भी सात कलमे वाले पैगम्बर बताए हैं (१) आदम सफी अल्लाह (२) नूह नबी अल्लाह (३) मूसा कलीम

Nijanand App

अल्लाह (४) इब्राहीम खलील अल्लाह (५) अली वली अल्लाह (६) मुहम्मद रसूल अल्लाह (७) ईसा रूह अल्लाह। इन सब पैगम्बरों की जमात को बातूनी अर्थ न जानने के कारण नूरनामे में काफिर कहा है।

उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबों की रानी।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत।। २४ ।।

इन पैगम्बरों की जमात ने जाहिरी अर्थ लिए, बातूनी नहीं, इसलिए इनको रद्द कर दिया गया। कुरान के तीसरे सिपारे की पहली सूरत अमेत सालून है, जिसमें इस तरह का बयान लिखा है।

महंमद की जो उमत भई, दस विध दोजख तिनकों कही।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर।। २५ ।।

कुरान के जाहिरी अर्थ लेने वाले मुहम्मद की उम्मत को भी दस तरह की आग में जलाया जाएगा। मुहम्मद की जमात के बहत्तर फिरके दस तरह की आग में जलेंगे। एक फिरका नाजी है। वह परमधाम जाएगा।

कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही।
वाही सूरत में कही पुलसरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात।। २६ ।।

अब श्री प्राणनाथजी महाराज पूछते हैं कि बताओ वह कौन सी जमात है जो परमधाम के अन्दर ली गई? कौन वह बहत्तर फिरके हैं जो दोजख की अग्नि में जलेंगे? इस अमेत सालून सूरत में लिखा है कि पुलसरात का रास्ता तलवार की धार के समान होगा। इस रास्ते को एक झटके से बिजली के समान कौनसी जमात पार करेगी?

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसरात की धार।
खास गिरो साहेबें सराहीं, गिरो दूजी पीछे लगी आई।। २७ ।।

और घोड़े के समान कौन सी जमात कूदकर निराकार के पार जाएगी? तीसरी कौनसी जमात है जो पुलसरात की राह पर चलकर कटकर मरेगी? खासलखास जमात मोमिनों की है। जिसकी सिफत सुभान करते हैं। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि है जो पुलसरात की राह को घोड़े के समान कूदकर पार कर जाएगी और मोमिनों के पीछे-पीछे चलेगी।

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजख को चलाई।
ऐसे उलमा सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे।। २८ ।।

जीवसृष्टि को शैतान अबलीस ने पीछे माया की तरफ घसीट लिया। वह सब दोजख की अग्नि में जलेंगे, अर्थात् चौरासी लाख योनियों के चक्कर में फसेंगे। जाहिरी इलम के पढ़ने वाले उल्मां, आरिफ लोग सब ऐसा बताते हैं, परन्तु इसके गुझ (छिपे) भेदों को कोई नहीं पाते।

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ।
बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़्या कुरान।। २९ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में इस तरह लिखा है कि बिना गुझ (छिपे) रहस्य को जाने पढ़े-लिखे लोग कयामत के दिन की पहचान नहीं कर पाते और न मुहम्मद साहब की रूह की ही पहचान होती है। दूसरे पैगम्बरों से मुहम्मद साहब का कितना फर्क है, यदि इस गुप्त रहस्य को नहीं समझा, तो कुरान और हदीसों का पढ़ना सही नहीं होगा।

Nijanand App

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान।
एह वास्ता पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब।। ३० ।।

जब तक कुरान के छिपे रहस्य न खुलें, तब तक यह पता नहीं चलता कि यह कुरान किसके वास्ते आया है? जब कुरान के बातूनी अर्थ समझ में आ जाएं तभी कयामत के निशान समझ में आ सकते हैं।

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी सब मेहेर इमाम।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत।। ३१ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे लोग कुरान के छिपे रहस्यों को नहीं बता सके। अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की मेहर से यह मोमिन जिनको उमी करके लिखा है, कुरान के सारे भेद खोल रहे हैं। शुरू में ही रसूल साहब ने यह बात साफ लिख दी थी। कुरान के जब गुझ (छिपे) भेद खुल जाएं, तभी कयामत के निशानों की पहचान सबको होगी।

किन खोले न .माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान।
पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन।। ३२ ।।

कुरान के बातूनी मगज मायने किसी ने नहीं खोले। सभी इस हकीकत को जाहिरी अर्थ करके सुनते हैं। पढ़-पढ़कर कई लोग आलिम और आरिफ बन गए हैं, परन्तु कुरान के गुझ (छिपे) भेदों का एक भी हरफ किसी ने नहीं खोला।

अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत।। ३३ ।।

स्वामीजी कहते हैं कि अब कुरान के छिपे भेदों को मैं खोल देता हूं और हरफ-हरफ के बातूनी भेद सबके सामने जाहिर करता हूं, जिससे सभी को कुलजम सरूप की वाणी का मारफत ज्ञान मिल जाए। और कयामत के निशान सबको पता लग जाएं।

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम।
खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी।। ३४ ।।

कुरान इस बात की गवाही देता है कि दुनियां के सभी लोग एक दीन में आ जाएंगे। हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सभी छिपे रहस्य खोल दिए हैं और मोमिनों की बुजरकी जाहिर कर दी है।

लिखे सब माएने बातन, सो हनोज लों ना खोले किन।
सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन।। ३५ ।।

कुरान के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला और सभी खूबी बातूनी अर्थ खुलने में ही है। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के छिपे रहस्यों को खोल दिया है और कयामत के निशान सबको जाहिर हो गए हैं।

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद।। ३६ ।।

पहली खूबी कुरान के बातूनी रहस्यों को खोलने की है, जिससे खुदा की पहचान होती है। दूसरी खूबी निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-धर्म) की सच्ची राह पर चलने वाले मोमिनों की है, जिन्होंने ईमान और

Nijanand App

इश्क से तन, मन, धन की कुर्बानी दी है। तीसरी खूबी बसरी, मलकी, और हकी सूरतों की है, जिन्होंने पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराई और अन्त समय में तीनों हिन्दुओं के तन में आए।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी।। ३७ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी तीनों एक ही हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। यह बसरी, मलकी और हकी तीनों का ज्ञान श्री अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराकर प्रेम रस (इश्क) का आनन्द दिलाने वाले हैं।

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए।। ३८ ।।

आदम सफी अल्लाह, नूह नबी अल्लाह, मूसा कलीम अल्लाह, इब्राहीम खलील अल्लाह, अली वली अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह, ईसा रूह अल्लाह यह सातों कलमे वाले पैगम्बरों की शक्ति श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई है।

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर।
सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया।। ३९ ।।

और जितने भी पैगम्बर हो गए हैं, उन सबकी शक्तियां इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई हैं। कुरान के सत्तरहवें सिपारे में इस तरह से लिखा है कि एक मुहम्मद के अतिरिक्त खुदा के पास कोई आया गया नहीं है, इसलिए एक मुहम्मद ही सच्चे पैगम्बर हैं और कोई दूसरा नहीं है।

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही।। ४० ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद के नाम के बहुत सारे पैगम्बर हुए हैं। इन सब पैगम्बरों के नाम पर जो पहचान बताई है, वह सारी महिमा रसूल साहब की ही है।

ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीस, वेद, कतेब सबके रहस्य कुलजम सरूप की वाणी ने खोल दिए हैं। हिन्दू-मुसलमान सभी मिलकर सुनो, विचार करो और ईमान लाओ। इस वाणी के द्वारा माया-ममता का मोह छोड़कर जो जागृत हो जाएगा, उसको आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड और अविनाशी महिमा का सुख देते हैं।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर।। ४२ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस बात को सुनकर ईमान और इश्क पर खड़े होने वाले मोमिनों का मूल अंकूर परमधाम में है और वह अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सामने उठ खड़े होंगे।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १४७ ॥

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने सुन्दरसाथ से कहते हैं, हे साथजी! मैं तुम्हारे वास्ते कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने वाली कुलजम सरूप की वाणी लेकर आया हूं। इस वाणी में परमधाम (मूल-मिलावा)

Nijanand App